क्रीँ हूँ ह्रीँ क्रोधानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः

क्रीँ हूँ ह्रीँ शुकानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः

क्रीँ हूँ ह्रीँ ध्यानानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः

क्रीँ हूँ ह्रीँ बोधानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः

क्रीँ हूँ ह्रीँ सुरानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः

इन गुरुओं को प्रणाम करने के बाद ब्रह्मरन्ध्र से कुलमातृका को क्रमशः मूलाधार में ले आयें, स्थापित करें। उसके प्रभापटल से अपने शरीर को गुलाबी रंग का माने। तब चौर गणेश मन्त्र का जप ग्यारह द्वारों में क्रमशः प्रत्येक द्वार में दश बार या एक बार न्यास करें। कपाट के समान न्यास करे यथाः-

क्रौँ हृदये।। ह्रीँ ह्रीँ दक्षिणनेत्रे।। ह्रीँ ह्रीँ वामनेत्रे।। ह्रीँ ह्रीँ दक्षकर्णे।। ह्रीँ ह्रीँ वामकर्णे।। हूँ हूँ दक्षनासापुटे।। हूँ हूँ वामनासापुटे।। ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ ह्रीँ मुखे।। ऐँ क्लीँ नाभौ।। ह्सौ लिङ्गमूले।। क्लूँ गुह्ये।। हूँ ब्रह्मरन्ध्रे।।

इसके बाद अपने-अपने गुरु क्रम एवं कल्पानुसार एकाक्षरी, से लेकर विद्याराज्ञी तक जो मन्त्र मिला हो उसका १०८ जप करें यथाः-

मन्त्रजप

अस्य श्री दक्षिणकालिकादेव्याः मन्त्रस्य भैरव ऋषिः। उष्णिक् छन्दः। श्रीमद्दक्षिणकालिकादेवताः। ह्रीँ बीजम्। हूँ शक्तिः। क्रीँ कीलकम्। मम धर्मार्थकाममोक्षार्थे जपे विनियोगः।।

ऋष्यादिन्यासः:- श्री भैरवऋषये नमः शिरसि। उष्णिक् छन्दसे नमः मुखे। श्रीमद्दक्षिणकालिकादेवतायै नमः हृदि। ह्रीँ बीजाय नमः गुह्ये। हूँ शक्तये नमः पादयोः। क्रीँ कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।।

करन्यासः- क्राँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। क्रीँ तर्जनीभ्यां नमः। क्रूँ मध्यमाभ्यां नमः। क्रैँ अनामिकाभ्यां नमः। क्रौँ कनिष्ठिकाभ्याँ नमः। क्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।।

हृदयादिन्यासः- क्राँ हृदयाय नमः। क्रीँ शिरसे स्वाहा। क्रूँ शिखायै वषट्। क्रैँ कवचाय हुम्। क्रौँ नेत्रत्रयाय वौषट्। क्रः अस्त्राय फट्।।

ध्यानम्

सद्यश्छिन्नशिरः कृपाणमभयं हस्तैर्वरं बिभ्रतीम्,
घोरास्यां शिरसःस्रजां सुरुचिरामुन्मुक्तकेशावलीम।
सृक्कासृक्प्रवहां श्मशाननिलयां नृत्योत्सवालङ्कृतीम्,
श्यामाङ्गीं कृतमेखलां शवकरैः देवीं भजे कालिकाम्।।

लं ईत्यादि पूजा करें। जप करें। जप के बाद पुनः षडंग न्यास करें उसके बा ध्यान करें लं ईत्यादि पूजा करें और जप समर्पण करें।।

अजपा जप समर्पण

तत्रादौ अद्य पूर्वेद्युहोरात्राचरितमुच्छवासनिःश्वासात्मकं षट्शताधिकमेकविंशति सहस्रसंख्यकं अजपाजपं मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूरानाहतविशुद्धआज्ञाब्रह्मरन्ध्रे चतुर्दल-षड्दल-दशदल-द्वादशदल-द्विदल-सहस्रदलेषु, स्वर्ण-विद्रुम-नील पिङ्गल-धूम्र-विद्युत-कर्पूर वर्णेषु, क्रमेण, स्थिताभ्यो गणपति-ब्रह्म-विष्णु-रुद्र जीवात्म-गुरुपादुकाभ्यो यथा भागशः समर्पयामि नमः। इति संकल्प्य, समर्पयेद्यथाः-

मूलाधारमण्डपे स्वर्णवर्णे चतुर्दलकमले वादिसान्तचतुर्वर्णान्वि गायत्रीसहितायगणनाथाय अजपानां षट्शतानि समर्पयामि नमः।

स्वाधिष्ठानमण्डपे षट्दलकमले विद्रुमनिभे बादिलान्तषट्वर्णान्वि सावित्रीसहितायब्रह्मणेऽजपानां षट्सहस्रं समर्पयामि नमः।

प्रकाशकः- श्री कालिका विद्याराज्ञी मंदिर

मणिपूरमण्डपे निलोत्पलनिभे दशदलकमले डादिकान्तदशवर्णान्विते लक्ष्मीसहितायविष्णवेऽजपानां षट्सहस्रं समर्पयामि नमः।

अनाहतमण्डपे द्वादशदलपद्मे पिङ्गलवर्णे कादिठान्तद्वादशवर्णान्विते गौरीसहितायरुद्रायाजपानां षट्सहस्रं समर्पयामि नमः।

विशुद्धमण्डपे धूम्रवर्णे षोडशदलपद्मे षोडशस्वरसहिते क्रियाशक्तिसहिताय जीवात्मनेऽजपैकसहस्रं समर्पयामि नमः।

आज्ञामण्डपे द्विदलपद्मे विद्युतपुञ्जनिभे हक्ष वर्णान्विते परमशिवशक्तिसहिताय परमात्मने सहस्रसंख्याकमजपाजपं समर्पयामि नमः।

ब्रह्मरन्ध्रे मण्डपे नानावर्णोज्वले पञ्चाशतवर्णान्विते सहस्रारपद्मस्थितायै सहस्रसंख्याकमजपाजपं समर्पयामि नमः।

।। अथाजपागायत्री जपविधिः ।।

ॐ अस्य श्रीअजपानामगायत्रीमन्त्रस्य हंसः ऋषिः। अव्यक्तगायत्री छन्दः। परमहंसो देवता। हं बीजम्। सः शक्ति। सोऽहं कीलकम्। ॐकारस्तत्त्वं। नमः स्थानं। श्वेतो वर्णः। मम मोक्षार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः- हंस ऋषये नमः शिरसि। अव्यक्तगायत्रीछन्दसे नमो मुखे। परमहंस देवतायै नमो हृदि। हं बीजाय नमः गुह्ये। ॐकार तत्त्वाय नमः हृदि। सः शक्तये नमः पादयोः। उदात्तस्वराय नमः कण्ठे। सोऽहं कीलकाय नमः नाभौ। नमसे स्थानाय नमः मूर्ध्नि। श्वेत वर्णाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः- ॐ हंसा सूर्यात्मने स्वाहा अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ हंसो सोमात्मने स्वाहा तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ हंसू निरंजनात्मने स्वाहा मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ हंसै निराभासात्मने स्वाहा अनामिकाभ्यां हुम्।

ॐ हंसौ अनन्ततनुः सूक्ष्मादेवी प्रचोदयात् स्वाहा कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ ... अव्यक्तबोधात्मने स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।। एवं हृदयादि कृत्वा ध्यायेत्।।

आराधयामि मणिसन्निभमात्मलिङ्गम्,

मायापुरी हृदय पङ्कज सन्निविष्टम्।

शुद्धानदीविमलचित्तजलावगाहम्,

नित्यं समाधिकुसुमैरपुनर्भवाय।।

इसके बाद अजपा गायत्री का जप करें यथाः- ॐ हंसो हंसाय विद्महे, सो... हंसाय धीमहि, तन्नो हंसः प्रचादयात्।। जप यथा शक्ति करके जपफल देवी को सम... करें। इसके बाद तन मन से पवित्र होकर भावना करें-

अहं देवी न चान्योऽस्मि, ब्रह्मैवाहं न शोकभाक्।

सच्चिदानन्नदरूपोऽहं, नित्यमुक्तस्वभाववान्।।

इस प्रकार गुरु, देवता और अपने को एक मानकर प्रार्थना करें-

त्रैलोक्यचैतन्यमये सुरेशी कालिके त्वच्चरणाज्ञयैव।

प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थं संसारयात्रामनुवर्तयिष्ये।।

जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिर्जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिः।

केनापि देवेन हृदि स्थितेन यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि।।

इसके बाद ॐ समुद्रमेखले आदि मंत्र से भूमि प्रार्थना करके बायाँ पैर आगे ... आवश्यक कार्य के लिए ग्राम के बाहर जाकर प्रातः कृत्य करें।

।। इति पूवार्धम् ।।

प्रकाशकः- श्री कालिका विद्याराज्ञी मंदिर

ॐ हंसौ अनन्ततनुः सूक्ष्मादेवी प्रचोदयात् स्वाहा कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ हं अव्यक्तबोधात्मने स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।। एवं हृदयादि कृत्वा ध्यायेत्।।

आराधयामि मणिसन्निभमात्मलिङ्गम्,
मायापुरी हृदय पङ्कज सन्निविष्टम्।
शुद्धानदीविमलचित्तजलावगाहम्,
नित्यं समाधिकुसुमैरपुनर्भवाय।।

इसके बाद अजपा गायत्री का जप करें यथाः- ॐ हंसो हंसाय विद्महे, सोऽ हंसाय धीमहि, तन्नो हंसः प्रचादयात्।। जप यथा शक्ति करके जपफल देवी को समर्पित करें। इसके बाद तन मन से पवित्र होकर भावना करें-

अहं देवी न चान्योऽस्मि, ब्रह्मैवाहं न शोकभाक्।
सच्चिदानन्नदरूपोऽहं, नित्यमुक्तस्वभाववान्।।

इस प्रकार गुरु, देवता और अपने को एक मानकर प्रार्थना करें-

त्रैलोक्यचैतन्यमये सुरेशी कालिके त्वच्चरणाज्ञयैव।
प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थं संसारयात्रामनुवर्तयिष्ये।।
जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिर्जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिः।
केनापि देवेन हृदि स्थितेन यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि।।

इसके बाद ॐ समुद्रमेखले आदि मंत्र से भूमि प्रार्थना करके बायाँ पैर आगे करके आवश्यक कार्य के लिए ग्राम के बाहर जाकर प्रातः कृत्य करें।

।। इति पूवार्धम ।।

प्रकाशकः- श्री कालिका विद्याराज्ञी मंदिर

अथ प्रातःकृत्यम्, उत्तरार्धम्

सर्वप्रथम जिस दिन पूजा करनी हो उस दिन जहां पूजन करना हो उस स्थान को वितान एवं पुष्पमालाओं से युक्त मण्डप सा सजावे तथा दिपकों से प्रकाशमान कर धूपादि से सुगंधपूर्ण करें।

वहां बैठकर भस्म, चंदनादि से त्रिपुंड्र वा उर्ध्वपुंड्र तिलक करें। तब गुरुमण्डल देवता का ध्यान करें यथाः-

श्रीनाथादि गुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवं,
सिद्धौघं बटुकत्रयं पदयुगं दूतिक्रमं मण्डलम्।
विराद्यष्ट चतुष्कषष्टि नवकं वीरावली पञ्चकम्,
श्रीमन्मालिनिमन्त्रराज सहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम्।।

श्री गुं गुरुभ्यो नमः। ॐ पं परमगुरुभ्यो नमः। ॐ पं परमेष्ठीगुरुभ्यो नमः। गोत्राचार्येभ्यो नमः। बादरायणाय नमः। श्री शंकरभगवत्पादाचार्याय नमः।

श्री दक्षिणकालिका के गणेश एकदंत है, अतः उनका ध्यान करें-

रक्तो रक्ताङ्गरागांशुककुसुमयुतस्तुन्दिलश्चन्द्रमौलि-
र्नेत्रैर्युक्तस्त्रिभिर्वामनकरचरणो बीजपूरं दधानः।
हस्ताग्रैः क्लृप्तपाशाङ्कुशरदवरदो नागवक्त्रोऽहिभूषो,
देवः पद्मासनस्थो भवतु सुखकरो भूतये विघ्नराज।।

अब भगवती श्री कालिका का ध्यान करे यथाः-

प्रकाशकः– श्री कालिका विद्याराज्ञी मंदिर

ध्यानम्

सद्यश्छिन्नशिरः कृपाणमभयं हस्तैर्वरं बिभ्रतीम्,
घोरास्यां शिरसःस्रजां सुरुचिरामुन्मुक्तकेशावलीम्।
सृक्कासृक्प्रहवां श्मशाननिलयां नृत्योत्सवालङ्कृतीम्,
श्यामाङ्गीं कृतमेखलां शवकरैः देवीं भजे कालिकाम्।।

आचमन

क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं हीं हीं आत्मतत्त्वाय स्वाहा।

दक्षिणे कालिके विद्यातत्त्वाय स्वाहा।

क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं हीं हीं स्वाहा शिवतत्त्वाय स्वाहा।

क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं हीं हीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं हीं हीं स्वाहा सर्वतत्त्वाय स्वाहा

इस तरह चतुराचमन करके हाथ धोकर मूलमन्त्र से तीनबार प्राणायाम करें प्राणायाम बाइनासिका से शुरु करें। यथाः– (क्रीं हूं हीं मन्त्र से भी प्राणायाम कर सकते है)

पूरक – १ बार मन्त्र बोले

कुंभक – ४ बार मन्त्र बोले

रेचक – २ बार मन्त्र बोले

संकल्प

अत्राद्य महामाङ्गल्यप्रद शुभकारिके अमुक वर्षे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुक शर्मा, वर्मा, गुप्त, दासोऽहं वा देवी अहम् श्री दक्षिणकालिका भगवती प्रित्यर्थे प्रातः संध्या मुलमन्त्र जपं च अहम् करिष्ये।।